आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन शोध पीठ

भारत और विश्व को प्राकृत भाषा के महत्त्व

दिनांक- 8 अक्टूबर 2024

दिनांक 8 अक्टूबर 2024 को प्राकृत भाषा को केंद्र सरकार द्वारा क्लासिकल भाषा का दर्जा प्राप्त होने के उपलक्ष्य में भारत और विश्व को प्राकृत भाषा के महत्त्व विषय पर एक दिवसीय गोष्ठी का आयोजन किया गया था | जिसमें प्राकृत विषय पर प्रकाश डाला गया | कार्यक्रम में मुख्य प्रो. पुष्पेन्द्र कुमार जैन, अतिथि सी.ए. अरविंद जैन, श्री विनीत जैन, श्री राजीव जैन (CSJMU_ एवं मुख्य वक्ता डॉ. आशीष जैन आचार्य एवं जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की सहायक आचार्य डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा जी रही | कार्यक्रम का संचालन आचार्य राहुल जैन एवं डॉ. कोमलचंद्र ने किया | आभार-ज्ञापन पीठ सचिव पं. सुमित कुमार जैन द्वारा किया गया |

'प्राकृत्य भाषा को मिलेगा नया आयाम'

कानपुर। छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ लैंग्वेजेज में आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन पीठ द्वारा 'भारत और विश्व के लिए प्राकृत्य भाषा का महत्व' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता डॉ. आशीष जैन ने कहा कि संस्कृत और प्राकृत्य दोनों भाषाएं भारतीय संस्कृति का गौरव हैं।

प्राकृत्य साहित्य में मानवीय संवेदनाओं का अभूतपूर्व चित्रण भारतीय ऋषि-मुनियों द्वारा किया गया है। यहां राजस्थान के जैन विश्व भारती विवि लाडनू की डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने कहा कि भारतीय संस्कृति के अजर एवं अमर होने का एक प्रमुख कारण भारत कि धार्मिक एवं आध्यात्मिक संस्कृति का जुड़ाव है। उन्होंने बताया कि भारत की प्राचीनता का वर्णन प्राकृत्य भाषा में प्राप्त शिलालेखों में दिग्दर्शित होता है। मुख्य अतिथि के रूप में जैन शोधपीठ के प्रमुख ट्रस्टी एवं संस्थापक प्रदीप तिजारा वाले एवं अरविंद कुमार सीए ने बताया कि भगवान महावीर ने सर्व कल्याण के लिए प्राकृत्य भाषा में अपने उपदेशों को दिया। गोष्ठी के संयोजक डॉ. अंकित त्रिपाठी ने भरोसा दिलाया कि विवि प्राकृत्य भाषा संवर्धन एवं विकास के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेगा।

जैनधर्म की प्राचीनतम प्राकृत भाषा को मिलेगा नया आयाम

❑ जैन शोधपीठ ने प्राकृत भाषा को क्लासिकल भाषा की मान्यता दिए जाने पर पीएम मोदी का जताया आभार

गोष्ठी में शामिल मुख्य अतिथि व अन्य।

कानपुर, 8 अक्टूबर। छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय के स्कूल आफ लैंग्वेजेज में आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन पीठ ने एक दिवसीय भारत और विश्व के लिए प्राकृत भाषा का महत्व विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता डॉ आशीष जैन ने कहाकि संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाएं भारतीय संस्कृति का गौरव है। प्राकृत साहित्य में मानवीय संवेदनाओं का अभूतपूर्व चित्रण भारतीय ऋषि मुनियों द्वारा किया गया है। द्वितीय वक्ता डॉ.समणी संगीत प्रज्ञा (जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय,लाडनू , राजस्थान) ने कहा कि भारतीय संस्कृति अजर एवम अमर होने का एक प्रमुख कारण भारत कि धार्मिक एवम आध्यात्मिक संस्कृति का जुड़ाव है। प्राकृत साहित्य में दया,करुणा, अहिंसा जीवत्य सिद्धि की बात की गई है। समणी जी ने शिलालेखों का उल्लेख करते हुए बताया कि भारत की प्राचीनता का वर्णन प्राकृत भाषा में प्राप्त शिलालेखों में दिग्दर्शित होती है। मुख्य अतिथि जैन शोधपीठ के प्रमुख ट्रस्टी एवम संस्थापक प्रदीप तिजारा वाले एवम अरविंद कुमार सीए ने प्राकृत भाषा के इतिहास से अवगत कराते हुए बताया कि भगवान महावीर ने स्वपर कल्याण के लिए प्राकृत भाषा में अपने उपदेशों को दिया । जैन समाज लंबे समय से प्राकृत भाषा के जिस उच्च सम्मान के लिए प्रयासरत था, पीएम के कुशल नेतृत्व में प्राप्त किया।

अध्यक्षीय वक्तव्य में निदेशक डॉ. सर्वेश मणि त्रिपाठी ने इस बात पर जोर दिया किया कि आज के समय में संपूर्ण विश्व को किस तरह से भगवान महावीर स्वामी के सिद्धांतो का पालन करने हेतु उद्यत होना चाहिए । गोष्ठी के संयोजक डॉ. अंकित त्रिपाठी ने भरोसा दिलाया कि विश्वविद्यालय प्राकृत भाषा संवर्धन एवं विकास के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेगा । कार्यक्रम का शुभारंभ सहायक आचार्य राहुल जैन ने किया। इस दौरान शोधपीठ के सचिव सुमित जैन, डॉ. कोमल जैन, डॉ. प्रभात गौरव मिश्र, डॉ. सुमना विश्वास , डॉ. पूजा अग्रवाल , डॉ. रिचा शुक्ला डॉ.विकास कुमार यादव , शालिनी शुक्ला, डॉ. प्रीतिवर्धन दुबे एवम अन्य शिक्षक तथा विद्यार्थी उपस्थित रहे।

संस्कृत-प्राकृत भाषा भारतीय संस्कृति का गौरव

कानपुर। सीएसजेएमयू के स्कूल ऑफ लैंग्वेजेज में आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन पीठ की ओर से एकदिवसीय भारत और विश्व के लिए प्राकृत भाषा का महत्व विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता डॉ. आशीष जैन ने कहा की संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाएं भारतीय संस्कृति का गौरव है। द्वितीय वक्ता राजस्थान के डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने कहा कि भारतीय संस्कृति प्राचीन है। जैन शोधपीठ के प्रमुख ट्रस्टी एवं संस्थापक प्रदीप जी तिजारा वाले और अरविंद कुमार ने प्राकृत भाषा के इतिहास के बारे में जानकारी दी।

प्राकृत भाषा को दी गई क्लासिकल की मान्यता

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- **जैन शोधपीठ ने इसके लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का किया आभार व्यक्त**
- **गोष्ठी में ऑनलाइन तरीके से जुड़े कई प्रांतों से विद्यार्थी और शिक्षक**

अमृत विचार। सीएसजेएमयू के स्कूल आफ लैंग्वेजेज में आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन पीठ ने भारत और विश्व के लिए प्राकृत भाषा का महत्व विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया। जैन शोधपीठ ने प्राकृत भाषा को क्लासिकल भाषा की मान्यता दिए जाने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभार जताया। कहा कि प्रधानमंत्री के प्रयास से प्राचीनतम प्राकृत भाषा को नया आयाम मिलेगा।

मुख्य वक्ता डॉ.आशीष जैन ने कहा कि संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाएं भारतीय संस्कृति का गौरव हैं। प्राकृत साहित्य में मानवीय संवेदनाओं का अभूतपूर्व चित्रण भारतीय ऋषि मुनियों द्वारा किया गया है। राजस्थान के विश्व भारती विश्वविद्यालय की डॉ.समणी संगीत प्रज्ञा ने कहा कि प्राकृत साहित्य में दया, करुणा व अहिंसा जीवत्य सिद्धि की बात की गई है। मुख्य अतिथि जैन शोधपीठ के प्रमुख ट्रस्टी व संस्थापक प्रदीप जी तिजारा व अरविंद कुमार जीसीए ने प्राकृत भाषा के इतिहास बताया। कहा कि भगवान महावीर ने प्राकृत भाषा में अपने उपदेश दिये। जैन समाज लंबे समय से प्राकृत भाषा के जिस उच्च सम्मान के लिए प्रयासरत था, उसे आखिरकार प्रधानमंत्री के नेतृत्व में प्राप्त किया। अध्यक्षीय वक्तव्य निदेशक डॉ. सर्वेश मणि त्रिपाठी ने दिया। गोष्ठी संयोजक डॉ.अंकित त्रिपाठी थे।

डॉ.प्रभात गौरव मिश्र ने प्राकृत भाषा एवं साहित्य के महत्व के चिंतन पर जोर दिया। गोष्ठी में ऑनलाइन माध्यम से देश के विभिन्न प्रांतों से विद्यार्थियों व शिक्षकों ने जुड़कर प्रधानमंत्री व कुलपति प्रोफेसर विनय कुमार पाठक का आभार व्यक्त किया। इस दौरान सहायक आचार्य राहुल जैन, शोधपीठ के सचिव सुमित जैन, डॉ. कोमल जैन, डॉ. सुमना विश्वास, डॉ.पूजा अग्रवाल, डॉ. रिचा शुक्ला, डॉ.विकास कुमार यादव, शालिनी शुक्ला, डॉ. प्रीतिवर्धन दुबे समेत आदि शिक्षक व विद्यार्थी रहे।